Indian J. Soc. & Pol. 10 (02) :71-74 : 2023 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2023 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में समकालीन समाज के विविध रूप

कायनात काजी[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर,यूनिवर्सिटी आफ पेटोलियम एण्ड एनर्जी स्टडीज, देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

ABSTRACT

अगर कहें कि कृष्णा सोबती का कथा–साहित्य समाज का आइना रहा है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगा। उनके पूरे कथा साहित्य को उठा कर देख लें उनके कथा–साहित्य में समकालीन सजगता का प्रवाह स्पष्ट नजर आता है। वर्ष –1958 में आया उनका उपन्यास डार से बिछुड़ी पर विभाजन की त्रासदी की काली छाया किस प्रकार एक स्त्री के जीवन को प्रभावित करती है का बड़ा ही मार्मिक और सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है। समाज में होने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म और विशाल से विशाल परिवर्तन के प्रति अति संवेदन रही है कृष्णा जी की कलम। ऐसा लगता है कि स्त्रियों पर बीतने वाली त्रासदी को कृष्णा जी किसी स्याही सोखते की तरह सोख जाती हैं और वो दर्द कलम के माध्यम से कागज पर शब्दों के रूप में उतर आता है। उनकी रचना गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान को देखें तो लगता है जैसे कृष्णा जी जैसे जैसे अपने जीवन में बड़ी होती जा रही थीं वैसे वैसे उनकी लेखनी भी विस्तार पाती जाती है। इस रचना में उन्होंने गागर में सागर भरी है और अपना जीवन का निचोड़ डाला है। ये रचना उनके निजी जीवन को स्पर्श करती हुई औपन्यासिक रचना है। इसे पढ़ते हुए लगता है जैसे एक युग कागजों पर उतर आया हो।

KEYWORDS: *महिला अध्ययन, साहित्य, कथा साहित्य, कृष्णा सोबती*

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में समकालीन समाज के विविध रूप और रंग विशेष रूप से उनके महिला चरित्रों के माध्यम से बड़ी ही कुशलता से प्रदर्शित किए गए हैं। वह अपने साहित्य का सृजन इस नफासत से करती हैं कि पाठक को पढ़ते हुए उस काल खंड में उपस्थित होने की अनुभूति मिलती है। फिर चाहे वह विभाजन के कालखंड की बात हो या फिर अभिजात्य वर्ग की किसी आत्मविश्वास से भरी हुई नायिका का उद्घोष, या फिर हो अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव पर बैठी माँ का बेटी को जीवन भर के अनुभवों पर आधारित सीख देना।

समाज में प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ नवीन घटित होता है। उसमें कुछ समाज सापेक्ष होता है तो कुछ समाज पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। विभिन्न प्रकार की नियमित घटित घटनाओं व परिस्थितियों का प्रत्यख अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव सर्वाधिक व्यक्ति पर पड़ता है लेकिन उनसे सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया एक समान नहीं होती, भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है। उस काल की घटनाओं, हालातों के प्रति किसी का रवैया पूर्ण जागरूक होता है तो कोई उनके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की टीका–टिप्पणी न कर बिल्कुल तटस्थता का रास्ता चुनते हैं लेकिन वह वर्ग अथवा व्यक्ति जो इनके प्रति पूरी तरह जागरूक है वह इन समकालीन विषयों के प्रति पूर्ण सजग है। उसे ज्ञात होता है कि उसे कब और कैसी प्रतिक्रिया अथवा व्यवहार देना है। इस समकालीन सजगता के प्रवाह में कुछ अधिक जिज्ञासायें, चेष्टायें, अधिकारों के प्रति जागरूकता, आगे बढ़ने की ललक, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, तार्किक क्षमताओं आदि विशेषताओं से युक्त व्यक्ति समाज को एक सकारात्मक दिशा व योगदान देते हैं।

अनेक मासूम, भोली–भाली व नाबालिग लड़कियों पर समाज विरोधी तत्वों की कुदृष्टि पड़ती ही रहती है और अवसर पाते ही भूखे शेर की तरह वे उस पर टूट पड़ते हैं। उसकी मर्यादा व अस्तित्व तक को नोंच–नोंचकर खा डालते हैं। वह भयावता जीवन भर उस निर्दोष का पीछा नहीं छोड़ती। समाज की ओर से अनेक ताने–उलाहने, छींटाकशी, गन्दी नजरें, अपमान, प्रताड़ना, तिरस्कार आदि का उसे सामना करना पड़ता है। ऐसे में पहले से ही अपना सब कुछ खो चुकी वह नादान टूटकर रह जाती है। उसका धैर्य, साहस, सहनशीलता, सब जवाब दे जाती हैं लेकिन इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कुछ उसके हितैषी, शुभचिंतक उसका साथ नहीं छोड़ते और जीवन के प्रति आशा जगाते हैं, सकारात्मक सोच को विकसित करते हैं। उन सबको नजरअंदाज कर पूरी हिम्मत के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, उसे स्वयं पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि वह भविष्य में स्वयं को दोषी न समझकर पूरे आत्मविश्वास के साथ जीवन में स्वाभिमान, सम्मान से जीने के लिए सजग करते हैं और उस पर अपना भी पूर्ण विश्वास जताकर उसकी सोच को सकारात्मक प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं:–

अचानक रत्ती का गला भरा आया, आँखों में मोती चमकने लगे। रुलाई को रोकने की कोशिश की, फिर रोते–रोते हाथों में मुँह छिपा लिया। असद ने हाथ उठा दिए। डबडबाई आँखों में देखा और झिड़क दिया– बस!

1: Corresponding Author

जाने क्या–क्या कहा करते हैं। रत्ती बुरी है। इसे लड़के पसन्द हैं। इसे गिरजाघर के पीछे देखा था। में तो किसी से कुछ कहती नहीं हूँ असद भाई–पुरानी बात है, फिर भी!

इधर देखो रत्ती! ऐसे! अब हमारी बात सुनो–

रत्ती हमेंशा याद रखेगी, वह एक अच्छी लड़की है प्यारी और बहादुर।

हँसती रुलाई में रत्ती ने पहले आपा की ओर देखा, फिर असद भाई की ओर और आँखें पोंछ ली।

असद ने सुनहरे बालों पर थपकी दी और बड़प्पन से कहा–

अब यह लड़की घर जाएगी। मामा के पूछने पर सही बात कहेगी और––––––। (सूरजमुखी अँधेरे के)

अपने व्यक्तित्व, अस्तित्व पर किसी अन्य अनधिकृत चेष्टा हर किसी के लिए सहज, सरल नहीं है, फिर वह चाहे कितना भी प्रिय, घनिष्ठ व हितैषी ही क्यूँ न हो। स्वयं पर अधिकार जमाने का हक किसी को यूँ ही नहीं दिया जा सकता। कोई किसी की सम्पत्ति अथवा जागीर नहीं होता, जिस पर कोई दूसरा आकर अपना आधिपत्य स्थापित कर ले। मेंत्री सम्बन्धों में सामान्य औपचारिक सम्बन्धों को दूसरा पक्ष एक अलग ही रूप देने लगता है, उस पर अधिकार जताने की, स्वयं को उसका खास साबित करने की चेष्ट करने लगता है किन्तु जब उसकी यह हिमाकत, संजीदा, रुख इख्तियार कर लेती है तो उसे आईना दिखाना जरूरी हो जाता है जिससे उसके सारे भ्रम, गलतफहमी दूर हो सकें और अपने इर्द–गिर्द खींची रेखा के बाहर तक ही स्वयं को सीमित रख सके। अपने वजूद, आत्मसम्मान पर किसी अन्य का आधिपत्य अथवा अधिकार किसी जगह तथा स्वाभिमानी के लिए सहन करना सम्भव नहीं है–

तुम्हारी शाम बर्बाद न हो इसलिए अब तक सुनती रही। तुम मेंरे गार्जियन नहीं हो। हम एक–दूसरे को नापसन्द नहीं करते बस, इतना ही हक हमारा एक–दूसरे पर है।

अपमान से रोहित के नथुने फड़कने लगे–

आज तुम्हारा मिजाज ठीक नहीं–किसी और दिन सुलझूँगा तुमसे।

रत्ती ने डपट दिया–

तुम किसी भी दिन आज की सी बातें नहीं करोगे। मुझे किसके साथ कहाँ जाना चाहिए, यह मेंरे सोचने की बात है, किसी और की नहीं।

प्रेम देने का नाम है, जिसमें प्रतिउत्तर, प्रतिकार की कोई गुंजाइश नहीं होती। प्रेम करने के एवज में, दान रूप में अथवा बलात् किसी से प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रेम मन के भीतरी भाग से पैदा होने वाला एक पवित्र भाव है जिसे किसी पर जबर्दस्ती थोपा अथवा पाया नहीं जा सकता। ऐसा करने पर वह मात्र शरीर तक सीमित रह सकता है किन्तु अन्तर्मन को स्पर्श करने तथा उसके तारों को झंकृत करने में सर्वथा असफल ही रहता है। किसी की सच्ची प्राप्ति तभी सम्भव है जब दोनों ओर समान भावनाओं का आदान–प्रदान हो, जिसमें उनकी सहर्ष स्वीकृति हो, जिसे वे पूरी शिद्दत से महसूस करें किन्तु ऐसा न होने पर, प्रेम के एकतरफा, स्वार्थी अथवा वासनायुक्त होने पर स्त्री के लिए तो ऐसे रिश्ते को सहज रूप में अपनाना सरल नहीं रह जाता व अपनी आत्मा की आवाज सुन, पूरे स्वाभिमान के साथ इस प्रकार के बलात् थोपे जाने वाले सम्बन्ध को पूर्णतः नकारने का साहस रखती है और पुरजोर तरीके से उसका विरोध करती है, सम्पूर्ण वस्तुस्थिति, अपनी इच्छा, पसन्द को बिना किसी लाग–लपेट के प्रदर्शित करती है। उसका इस प्रकार का समकालीन सजगतापूर्ण व्यवहार व प्रतिक्रिया उसे अपनी ही दृष्टि में उच्च स्थान पर काबिज करती है–

तब अचानक कोई बाँध टूटा हो–

सख्ती से रत्ती को बाँहों में जकड़ लिया–

तुम्हें चाहता हूँ ।

तुम्हें ही पाऊँगा।

छोड़ो।

रोहित ने अचकचाकर देखा, उसने रत्ती को सचमुच छोड़ दिया है।

चाहूँगी नहीं और तुम जबर्दस्ती––––––

रोहित की परेशानी पर सिर धुनती देख सूखे गले से कहा–

पाने के लिए दोनों को एक–दूसरे को चाहना होता है रोहित!

आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप नारी की सोच, उसके दृष्टिकोण व उसकी जीवन–शैली में व्यापक अंतर दृष्टिकोण होता है। एक गृहिणी के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए आज उसकी विचारधारा व कार्यशैली में उदासीनता परिलक्षित नहीं होती, समकालीन सजगता का प्रवाह वहाँ स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। अब वह स्वयं को गृहस्थी की भट्टी में पूरी तरह झोंककर अपना सर्वस्व होम नहीं कर देती वरन् अब वह खुद के लिए भी समय निकालती है। सबके साथ–साथ अपनी भी साज–सम्भाल पूरी तन्मयता के साथ करती है। अपने स्वास्थ्य की अनदेखी न कर जागरूक रहकर अपने भोजन इत्यादि का भी गम्भीरता से ध्यान रखती है, अपनी पहचान को खोने नहीं देती, पूरी तरह स्वस्थ व स्फूर्तिमय जीवन व्यतीत करते हुए अपने अस्तित्व को विशिष्ट व्यक्ति की भाँति ही मानकर चलती है–

डॉक्टर साहिब, मेंरा वजन बरसों पचास पर अटका रहा। बच्चे हुए तो भी एक इंच चरबी नहीं चढ़ने दी, एक ही रफ्तार, सब नियम से। कभी चिकनी–चुपड़ी खुराक नहीं खाई, हाँ, बच्चे के साथ टॉनिक जरूर लिया करती थी, विनकारनिस, आलस कभी नहीं...।

ईश्वर ने मनुष्य का जीवन का वरदान दिया है। इस जीवन के अनेक रंग रूप हैं। इसकी स्थिति सदैव एक समान नहीं रहती। अनेक रंग इसमें एक साथ घुले–मिले रहते हैं। हर पल एक नया स्वाद चखने को मिलता है कभी तीखा तो कभी खट्टा तो कभी मीठा और कभी बिल्कुल बेस्वाद। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पृथक् अनुभूतियाँ, अनुभव। सबका अपना भाग्य, जिस पर किसी अन्य का कोई वश नहीं चलता। इस मनुष्य जीवन में निरन्तर आरोह–अवरोह का क्रम चलायमान रहता है कभी खुशियाँ तो अगले ही पल गम, पूरे माहौल पर छा जाता है लेकिन कोई भी स्थिति स्थायी नहीं होती। हर रात के बाद सुबह और फिर सुबह के बाद रात, जिन्दगी इसी रफ्तार से आगे बढ़ती रहती है। इन सब पर काबू पाना किसी इंसान के बस की बात नहीं है। इन समस्त गतिविधियों का संचालन वह सर्वशक्तिमान बड़ी ही कार्य–कुशलता के साथ करता है और हम सब उसके हाथ की कठपुतलियाँ बन उसके आदेश,

इच्छा और इशारे पर नाचते चले जाते हैं। सुख में सुखी और दुःख में दुःखी तो सभी हो जाते हैं किन्तु विपरीत हालातों में भी धैर्यपूर्ण आचरण करें, मनुष्यता तभी सफल सिद्ध होती है। ऊपर वाले की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार कर उसकी इच्छा का आदर कर स्थितियों को यथारूप में स्वीकारते हुए ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य पूर्ण होता है–

जिन्दगी में कुछ नोना–नमकीन और कुछ मिश्री–मीठा, इतना ही, पछतावा कैसा, सबकी जन्मपत्री चितकबरी ही हुआ करती है। हर्ष–शोक, लाभ–हानि, ऊँच–नीच–सब बारी–बारी अपनी झलक दिखाते हैं। ऐसा किसी के हाथ में नहीं कि फुलझडियाँ ही छूटती रहें। सब गर्म–सर्द समय में घुल–मिल जाते हैं। इसकी नाकाबंदी ऊपर वाले के सिवाय कोई दूसरा नहीं कर सकता।

आलस्य तथा लापरवाही पूर्ण आचरण से कभी भी सफलता अर्जित नहीं की जा सकती। अपने जीवन का लक्ष्य साधकर सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ उस दिशा में आगे बढ़ते रहने से ही उसकी प्राप्ति सम्भव है। किनारे पर बैठकर सागर में उठती ऊँची लहरों से डरकर जीवन की नैया पार नहीं हो सकती पूरी तैयारी, तत्परता व आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना पूरी सजगता व उत्साह–जोश के साथ करके अदम्य जिजीविषा का परिचय देते हुए ही किया जा सकता है। परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता उसकी पूर्ति कठिन अवश्य सही किन्तु उसका फल सदैव सुखदायी ही होता है हाँ, किए गए श्रम का प्रतिशत कम या अधिक हो सकता है। फल की प्राप्ति किए गए श्रम पर ही निर्भर करती है। बिना प्रयास किए हाथ पर हाथ रखकर बैठने से बाधाओं अथवा कठिन परिस्थितियों पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती–

पर एक बात समझने की है। जो पोत बनाएँगे, वही सागर में उतरेंगे। श्रम करेंगे तो फल पाएँगे। यही उत्स है। जीने वालों की प्राप्ति।

जीवन व जीव का आगमन–प्रस्थान, उसका सम्पूर्ण संचालन नियति द्वारा पूर्व निर्धारित होता है। प्रकृति के इस अद्भुत रहस्य को सच्चे अर्थों में समझने वाले को जीवन के प्रति कोई संशय नहीं रह जाता। जनम और मृत्यु जीवन का सबसे बड़ा सत्य है, इसमें किसी प्रकार का कोई छल–कपट नहीं। इसको नियन्त्रित करना अथवा उस पर विजय पाना किसी भी जीव के सामर्थ्य शक्ति से परे है।

जो कुछ भी भोगना है वह इस जन्म–मृत्यु के चक्र के भीतर ही संभव हो पाता है। समस्त सुखों की प्राप्ति इसके रहते ही मुमकिन हो पाती है। पंचभूतों से निर्मित यह शरीर पुनः पंचतत्वों में ही विलीन हो जाता है, यही जीवन का अंतिम सत्य है। इस चिरन्तन सत्य को जानने–समझने वाला जीवन के सुख को पूरी तल्लीनता के साथ भोगता है और जो भी जितना भी मिला है उसी संतोष के साथ उसका सदुपयोग करते हुए अपना शेष जीवन पूरी सजगता के साथ जीता है–

लड़की, यह माया–छलावा नहीं। न–न। जीना और जीवन छलना नहीं। इस दुनिया से चले जाना छलना है। है कोई हाड़–मांस का जीव, जो शेष हो जाने के बाद पेड़ के पके रसीले आम खा सके? नहीं री। कोई पंचभूती बच्चा नहीं जो ऐसा कर सके। लड़की, यह दुनिया बड़ी सुहानी है।

स्त्री–पुरुष के रूप में सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को इस धरती पर उत्पन्न किया। जीवन के संचालन हेतु दोनों के समान अनुपात की महती आवश्यकता होती है किन्तु भारतीय समाज में स्त्री को सदा से ही दोयम दर्जे का महत्व दिया जाता है और पुरुष से कम से ही आंका जाता है। भारतीय परिवारों में पुत्री उत्पन्न होने पर शोक की लहर दौड़ जाती है तो पुत्र प्राप्ति होने पर खुशियाँ मनाई जाती हैं, मिठाइयाँ बँटती हैं, घर में उत्सव का माहौल होता है। लड़कियों के प्रति अन्याय की पराकाष्ठा तब होती है जब उनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है। घर के लड़कों को अपेक्षाकृत अधिक सुविधाएँ व अवसर उपलब्ध रहते हैं और कई बार तो इन मासूम बच्चियों के जीवन का ही अन्त कर दिया जाता है किन्तु इस सम्बन्ध में समकालीन सजगता का प्रवाह समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। प्रगतिवादी विचारों के पक्षधर व्यक्तियों की मानसिकता व व्यवहार लड़कियों के प्रति भेद–भावपूर्ण नहीं होता। लड़के और लड़की के मध्य कोई भेद न करके दोनों को समान अवसर की उपलब्धता रहती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनके पास अवसरों की समानता रहती है, बराबर मात्र में माता–पिता के प्रेम का विभाजन होता है। लड़कियों के प्रति शोषण, अत्याचार, अन्याय व भेदभावपूर्ण रवैये से जहाँ समाज गर्त में चला जाता है वहीं समानता के व्यवहार से समाज की उन्नति की राह और सरल हो जाती है–

– अम्मू, लड़की को देख मन उदास तो हुआ होगा।

– इतनी चतुर न बन, लड़की अपने दिल से पूछ।

कभी तुम बहनों–भाइयों से कोई भेदभाव किया गया?

– नहीं अम्मू, कभी नहीं। पर सब घरों में लड़कियों के साथ ऐसा नहीं होता। लड़की के पहुँचते ही निराशा छा जाती है।

– लड़की तुम्हारे माता–पिता ने कभी कोई फर्क नहीं रखा।

हिन्दी कथा–साहित्य की जानी–मानी लेखिका कृष्णा सोबती ने अपनी सशक्त लेखनी के कौशल से समाज के विविध रूप रंगों को अपने कथा–साहित्य में समाहित किया है। अपनी रचनाओं में उन्होंने समाज के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों का बिल्कुल स्वाभाविक व सटीक स्वरूप प्रस्तुत किया है। पूर्णतः संस्कारित व उच्च शिक्षित सोबती जी का समाज को देखने का अपना पृथक् दृष्टिकोण है। उन्होंने आधुनिक व विकासवादी दृष्टि व सोच के मद्देनजर समाज के यथार्थ का वास्तविक चित्र अपनी कृतियों में उकेरा है यद्यपि अपने कथा–साहित्य में यथार्थ का ऐसा वास्तविक व निडर रूप में प्रदर्शन करने के कारण उन्हें तीक्ष्ण टिप्पणियों व आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा है किन्तु इससे भयभीत अथवा निरुत्साहित होकर उन्होंने अपनी लेखन शैली व मानसिकता को परिवर्तित नहीं कर दिया। किसी भी प्रकार की तीखी प्रतिक्रिया उनको व उनके निडर लेखन को प्रभावित नहीं कर सकी और उन्होंने अपने चिर परिचित अंदाज में ही यथार्थ का बिल्कुल सजीव प्रस्तुतीकरण अपने कथा–साहित्य में किया। उनके कथा साहित्य में अलग अलग पत्रों के माध्यम से समकालीन सजगता का प्रवाह स्पष्ट नजर आता है फिर चाहे वह स्त्री पुरुष सम्बन्ध हों या फिर स्त्री पुरुष से सम्बंधित भेदभाव की भावना। उनकी कृति गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान की मुख्य पात्र भले ही कृष्णा जी स्वम हों लेकिन उन्होंने इस उपन्यास में विभाजन की त्रासदी के हवाले से समकालीन समाज का अद्भुत चित्रण किया है। उनकी लेखनी से निकले शब्द पाठक के सामने किसी चलचित्र से उभरते हैं। पीछे छोड़ आए पाकिस्तान में स्थित लाहौर के अपने दयाल सिंह कालेज की यादें, चनाब और रावी से जुड़े किस्से तो वहीं पहली नौकरी की तलाश में राजस्थान के सिरोही के राजपरिवार और उस रियासत के हाल का चित्रण अद्भुत बन पड़ा है। वह पूरे उपन्यास में अनेक माध्यमों से विस्थापितों का दर्द बयान करने से नहीं चूकतीं।

और ये बड़ी अनोखी बात है कि कृष्णा जी एक साधन संपन्न परिवार से आती हैं। जहाँ जीवन की हर सुविधा मौजूद थी। घर का माहौल ऐसा लोकतान्त्रिक जिसमें बेटा और बेटी में कोई असमानता नहीं रही। कृष्णा जी ने अपनी पूरी जिन्दगी अपनी शर्तों पर जी। लेकिन इस सब के बावजूद समाज के लगभग हर तबके की महिला के दर्द को उन्होंने महसूस किया और अपने साहित्य में स्थान दिया।

REFERENCES

सोबती, कृष्णा (2017) *गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

सोबती, कृष्णा (1972) *सूरजमुखी अँधेरे के,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

सोबती, कृष्णा (1991) *ऐ लड़की लम्बी कहानी,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन